अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली । सोमवार, 13 मई 2019

शिक्षा वह शाक्तिशाली हथियार है, जिसका प्रयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।
-नेल्सन मंडेला

द. अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति

बीटी बैंगन के उत्पादन पर रोक के बावजूद हरियाणा में इसकी खेती का मामला जिस तरह सामने आया है, वह बेहद चौंकाने वाला है। अगर तत्काल सक्रियता नहीं दिखाई गई, तो बड़े पैमाने पर इसकी खेती को नहीं रोका जा सकेगा।

पिछली गली से बीटी?

यह बेहद चौंकाने वाला मामला है कि बीटी बैंगन के वाणिज्यिक उत्पादन पर रोक के बावजूद हरियाणा के फतेहाबाद जिले में एक किसान को बीटी बैंगन उपजाते हुए पाया गया है। यह किसान कई साल से न केवल बीटी बैंगन उपजा रहा है, बल्कि स्थानीय मंडी में इसकी बिक्री होने की बात भी कही जा रही है! जीएम यानी जेनेटिकली मोडिफाइड फसल का मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और जैव विविधता पर भयावह असर पड़ता है। अभी हमारे यहां केवल बीटी कपास के उत्पादन की ही अनुमति है। बीटी बैंगन और इसके पौधे की कोशिकाओं में खास तरह का जहर पैदा करने वाला जीन होता है। इसी कारण सामान्य बैंगन में लगने वाले कीट इसमें नहीं लग पाते। बीटी बैंगन खाने वाले चूहों के फेफड़े में सूजन और आमाशय में रक्तस्राव जैसे असर दिखे हैं। इसीलिए महाराष्ट्र हाइब्रिड सीड्स कंपनी द्वारा बीटी बैंगन को विकसित और इसका परीक्षण किए जाने तथा जीईएसी यानी जेनेटिक इंजीनियरिंग एप्रेजल कमेटी द्वारा 2009 में बीटी बैंगन को हरी झंडी देने के बावजूद तत्कालीन सरकार ने इसके वाणिज्यिक उत्पादन पर तब तक के लिए रोक लगाई, जब तक इससे संबंधित अनुकूल वैज्ञानिक अध्ययन नहीं आ जाते। पर फतेहाबाद के उदाहरण से स्पष्ट है कि मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण कानून को धता बताकर इसकी खेती हो रही है। यह खुलासा दो कारणों से चिंतनीय है। एक यह कि रोक के बावजूद इसके बीज कहां से लाए गए? संदेह महाराष्ट्र हाइब्रिड सीड कंपनी पर है और बांग्लादेश पर भी, जहां बीटी बैंगन उपजाया जाता है। ज्यादा बड़ी आशंका यह है कि हरियाणा के दूसरे इलाकों में भी बीटी बैंगन उपजाया जा रहा हो। पूरी सच्चाई तो जांच के बाद ही सामने आएगी, पर यह आश्चर्यजनक है कि बीटी बैंगन की खेती होने का पता राज्य कृषि विभाग के जरिये नहीं, बल्कि जीएम फूड्स के विरोधी कार्यकर्ताओं और संगठनों की सक्रियता से चला, जिनकी पहल से ही केंद्रीय प्रयोगशाला में इसकी जांच हुई। इस मामले में जीईएसी की चुप्पी खलने वाली है, क्योंकि उसकी निष्क्रियता के कारण सत्रह साल पहले बीटी कपास ऐसे ही गैरकानूनी तरीके से हमारे यहां घुस आया था। अगर तत्काल इस मामले में सक्रियता नहीं दिखाई गई, तो बीटी कपास की तरह बीटी बैंगन की व्यापक पैमाने पर खेती को नहीं रोका जा सकेगा।

अर्थव्यवस्था : नई सरकार की परीक्षा

केंद्र में जो भी सरकार आए, उसके लिए शुरुआती सौ दिन कतई आसान नहीं होंगे। एक चेतावनी के अनुसार, इस साल दुनिया के 70 फीसदी देशों में मंदी के आसार हैं, जिनमें भारत भी शामिल है।

बिंदू डालमिया

इस महीने के अंत तक नई सरकार सत्रहवीं लोकसभा में अपनी जगह बना चुकी होगी। हालांकि यह उत्सुकता भी बढ़ रही है कि भारतीय लोकतंत्र में इस चुनाव के नतीजे क्या रहेंगे। अगर चुनाव से पहले आए छह अनुमानों के औसत की बात करें, तो साफ लग रहा है कि भारतीय जनता पार्टी को फिर सत्ता में लौटना चाहिए। अगर अब तक के चुनावी चरणों की ओर देखें, तो यह भी जाहिर है कि कोई एंटी इनकंबेंसी फैक्टर नहीं है। यही तथ्य इस लोकसभा चुनाव को 2004 के चुनाव से अलग करता है।

सर्वेक्षणों के अनुसार, एनडीए को करीब 272 सीटें मिलने जा रही हैं। इस तरह नरेंद्र मोदी चुनावी दौड़ में सबसे आगे हैं। कांग्रेस और सहयोगियों के 141 सीटों तक पहुंचने का अनुमान जाहिर किया जा रहा है। सारा गुणा-भाग इस पर आधारित है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा को सपा-बसपा गठबंधन के हाथों कितना नुकसान हो सकता है। फिर विगत दिसंबर में हो हिंदी हृदय प्रदेश के तीन राज्यों-राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में मोदी की लोकप्रियता के बावजूद भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। यह भी माना जा रहा है कि बिहार, दिल्ली और गुजरात जैसे मजबूत किले में भाजपा पर आंच आ सकती है। पर ममता बनर्जी के गढ़ पश्चिम बंगाल और नवीन पटनायक के ओडिशा में भाजपा की स्थिति बेहतर होने की उम्मीद है।

हालांकि यह बात सही है कि पिछले लोकसभा चुनाव में जिन लोगों ने भाजपा को वोट किया था, उनमें से 31 फीसदी मध्यवर्ग के लोग नोटबंदी से निराश हुए हैं। लेकिन भाजपा ने अपनी रणनीति मुख्य तौर पर चार चीजों पर केंद्रित की है। ये हैं, पहली बार वोट देने वाले मतदाता, अपना काम शुरू करने वाले लोग, वे लोग, जिन्हें सरकार की सामाजिक कल्याण योजनाओं का लाभ मिला, और महिलाएं। हालांकि महिलाओं का वोट एक जगह नहीं पड़ता।

अलबत्ता केंद्र की सत्ता में जो भी सरकार आए, उसके लिए शुरुआती सौ दिन कतई आसान नहीं होंगे। इसकी वजह वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की वह चेतावनी है, जिसके अनुसार, इस साल दुनिया के 70 प्रतिशत देशों में मंदी आने के आसार हैं, जिनमें भारत भी शामिल है। जाहिर है, आनेवाली नई सरकार के लिए यह बड़ी चुनौती होगी, जिसे वैश्विक मंदी के समानांतर विकास की बहाली करनी होगी। गरीबी दूर करने के लिए जरूरी स्रोतों का इस्तेमाल करना सरकार के लिए बड़ी जरूरत होगा। फिर से चुने जाने पर नरेंद्र मोदी सरकार की चुनौतियां क्या होंगी? नई सरकार को बुनियादी क्षेत्र और आवासीय क्षेत्र में विकास को जारी रखना होगा, क्योंकि इन दोनों क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा होंगे। स्वरोजगार के लिए नए उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे। इससे औपचारिक क्षेत्र में रोजगार सृजन होगा। नई सरकार को इसके अलावा आयुष्मान भारत जैसे सामाजिक क्षेत्र के कार्यक्रम को आगे बढ़ाना होगा। इसके साथ-साथ किसानों की आय बढ़ाने के लिए वित्तीय प्रावधान करने के साथ मध्यवर्ग को भी करों के बोझ से बचाना होगा। यूनिवर्सल इनकम सपोर्ट स्कीम के लिए जीडीपी के एक प्रतिशत की आवश्यकता अगले कुछ साल तक होगी। इससे ग्रामीण उपभोक्ताओं की जरूरतों को गति मिलेगी। कुल 12 करोड़ किसानों के परिवारों को पीएम किसान योजना से भी लाभ की उम्मीद होगी।

भारत को तेज आर्थिक विकास की आवश्यकता होगी। ऐसा तभी हो पाएगा, जब अर्थव्यवस्था को बढ़ाया जाए और महंगी और लोकप्रिय सामाजिक योजनाओं की जगह इस पर ध्यान दिया जाए, जिससे कि आर्थिक फायदा खुद ब खुद नीचे तक पहुंचे। इसके लिए कई उपायों की जरूरत होगी, जैसे कि टैक्स आधार बढ़ाने की आवश्यकता है, रोजगार सृजन तथा मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मौजूदा 17 फीसदी से बढ़ाकर वर्ष 2022 तक 25 फीसदी करना होगा। साथ ही सौ लाख करोड़ रुपये के निवेश से हाइवे, रेलवे और हवाई अड्डों का संजाल बिछाना होगा। इससे 25-30 लाख करोड़ नौकरियां पैदा होंगी। संरचनागत और बाजार आधारित सुधार तेज करने होंगे। व्यापार उदारीकरण तथा भूमि रिकॉर्ड्स का डिजिटलीकरण करना होगा। एयर इंडिया और एमटीएनएल के निजीकरण की प्रक्रिया शुरू करनी होगी। कुल 34 ऊर्जा संयंत्रों के 1.80 लाख करोड़ के घाटे को कम करना होगा। यह भी ध्यान रखने की बात है कि उनका 40 फीसदी बिजली का बकाया अभी तक राज्यों ने नहीं दिया है। नौकरशाही को कारगर बनाने के साथ रिजर्व बैंक की स्वायत्तता बहाल करनी होगी। इसके बाद प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआई जैसी केंद्रीय संस्थाओं की बेहतरी को प्राथमिकता में रखना होगा।

रोजगार मानवीय पूंजी है और जितना रोजगार सृजन होगा, उतनी ही स्थिति सुधरेगी। हालांकि पिछले तीन साल में 4.8 करोड़ लोगों ने स्वरोजगार शुरू किया है। ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए लचीली नीतियों के आधार पर फंडिंग, मुफ्त कर्ज और रेगुलेटरी प्रक्रिया में ढील दी जानी चाहिए। निर्यात क्षेत्र और ई कॉमर्स में रोजगार बढ़ने की पूरी गुंजाइश है।

भारत फिलहाल 2.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था है। वर्ष 2030 तक भारत सात ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हो जाएगी। शहरीकरण, विकास और नौकरियां अर्थव्यवस्था को विस्तार देने की कुंजी बनेंगी। अब देश में 2030 के विकास का एजेंडा तय किया जाना चाहिए, जिसके लिए सालाना 70 से 90 करोड़ स्कवेयर मीटर शहरी जगह की आवश्यकता होगी, जिससे कि शहरों के आसपास 70 फीसदी रोजगार सृजित हो सकें।

उम्मीद है कि नरेंद्र मोदी जब फिर से नए कार्यकाल में आएंगे, तो मजबूती के साथ दमदार आधारशिला पर बुनियादी काम आगे बढ़ाएंगे। उनके सामने हालांकि चुनौतियां भी होंगी। लेकिन अगर उन्होंने अपना काम तरीके से किया, तो आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर भारत काफी समृद्ध और खुशहाल होगा।

लेखिका, स्तंभकार और नीति आयोग में वित्तीय समावेश और वित्तीय साक्षरता कमेटी की चेयरपर्सन हैं।

अंतर्ध्वनि

>> हेलेन सिक्सु

जो नहीं किया, उसे करने की हिम्मत करो, उसी से खुशी मिलेगी

***केवल** वही पुस्तक लिखने योग्य है, जिसे लिखने का हममें साहस नहीं है। जिस पुस्तक को हम लिख रहे होते हैं, वह हमें आहत करती है, हमें कंपाती है, शर्मिंदा करती है, खून निकालती है।*

लेखन न कहने योग्य बातों को कहने में सफल होने का उत्कृष्ट, मुश्किल और खतरनाक जरिया है। हमें वह भाषा बोलना सीखना चाहिए. जिसे स्त्रियां तब बोलती हैं, जब उनकी गलती निकालने वाला कोई नहीं होता है। जो लोग जेलों में बंद हैं, वे खुली हवा का महत्व उनके जेलरों से बेहतर जानते हैं। सच्चाई कई तरह की है— जिन दीवारों को हम खामोश समझते हैं, उनमें बहुत सारे गुप्त रास्ते हैं। मैं कविता में विश्वास करती हूं।

हमें उस झूठी स्त्री को मार देना चाहिए, जो जीवित स्त्री को सांस लेने से रोकती है। उस प्यार से बढ़कर कोई प्यार नहीं है, जिसे भेड़िया भेड़ के उस बच्चे के लिए महसूस करता है, जिसे वह खाता नहीं है। मेरा मानना है कि कुछ ऐसे लोग हैं, जिनमें चीजों को आपस में मिलाकर उन्हें पुनर्जीवित करने की ताकत होती है। लोग आपको देखते नहीं हैं, वे आपको खोजते हैं और आप पर आरोप लगाते हैं।

जाओ, उड़ो, तैरो, कूदो, उतरो, पार करो, अज्ञात से प्रेम करो, अनिश्चित से प्रेम करो, जिसे अब तक नहीं देखा है-उससे प्रेम करो, किसी से भी प्रेम मत करो-तुम जिसके हो, तुम जिसके होगे-अपने आपको खुला छोड़ दो, पुराने झूठ को हटा दो, जो नहीं किया उसे करने की हिम्मत करो, वही करने में तुम्हें खुशी मिलेगी और प्रसन्न रहो, डर लगने पर वहां जाओ, जहां जाने से डरते हो, आगे बढ़ो, गोता लगाओ, ऐसा करने पर ही तुम सही मार्ग पर हो।

-फ्रेंच भाषा की प्रख्यात स्त्रीवादी लेखिका और विचारक

लोकतंत्र में सामंतवाद

क्या मतदाताओं को नेहरू-गांधी परिवार की सामंतवादी आदतों की याद दिलाना जरूरी नहीं है? क्या यह याद दिलाना जरूरी नहीं है कि देश में एक ऐसा दौर था, जब प्रधानमंत्री छुट्टियां मनाने के लिए नौसेना के जहाजों का इस्तेमाल करते थे?

तवलीन सिंह

पिछले सप्ताह जब नरेंद्र मोदी ने अपने एक भाषण में कहा कि राजीव गांधी ने नौसेना के आईएनएस विराट का दुरुपयोग किया था, उसी दिन प्रियंका गांधी ने अपने भाषण में कहा कि प्रधानमंत्री अपनी हर गलती का दोष उनके परिवार पर थोपते हैं। सवाल यह है कि क्या देश के मतदाताओं को नेहरू-गांधी परिवार की सामंतवादी आदतों की याद दिलाना जरूरी नहीं है। क्या यह याद दिलाना जरूरी नहीं है कि भारतीय लोकतंत्र में एक ऐसा दौर था, जब प्रधानमंत्री परिवार को छुट्टियां मनाने नौसेना के जहाजों पर लक्षद्वीप लेकर जाया करते थे ?

मुझे गांधी परिवार की वह छुट्टी याद है। याद है कि उनके साथ कौन-कौन गए थे। यह भी याद है कि हम पत्रकार उन दिनों देश के इस अति-शक्तिशाली राजपरिवार के इतने गुलाम थे कि देश भर में शायद ही कोई पत्रिका थी, जिसने उस छुट्टी की आलोचना करने की हिम्मत दिखाई हो।

दोष हम पत्रकारों का तो था ही, लेकिन वह दौर ही कुछ ऐसा था कि बहुत कम लोग थे, जिनको लोकतंत्र में सामंतवाद की इस नकरात्मक मिलावट का ध्यान था।

अच्छा है कि देश की राजनीति अब बदल गई है और प्रधानमंत्री निवास में एक चायवाले का बेटा विराजमान है, जिसने कभी छुट्टी नहीं ली। मोदी ने आईएनएस विराट का जिक्र क्या किया कि सोशल मीडिया पर तस्वीरें दिखने लगीं, जिनमें दिखाया गया है कि किस तरह पंडित नेहरू ने कभी अपनी बेटी और नवासों को भी नौसेना के एक लड़ाकू जहाज पर घुमाया था। मुझे लोगों ने लेख भेजे हैं, जिनमें आईएनएस विराट का पूरा वर्णन दिया गया है और यह भी लिखा गया है कि इस किस्म के लड़ाकू जहाज पर विदेशियों के होने पर प्रतिबंध है। राजीव गांधी के मेहमानों में सोनिया के इतालवी रिश्तेदार भी लक्षद्वीप में छुट्टी मनाने गए थे। मुझे एक और लेख मिला, जिसमें खर्च और पूरे प्रबंध के बारे में विस्तार से बताया गया।

इन दोनों लेखों को पढ़कर मैं हैरान रह गई। लेकिन मेरे अधिकतर पत्रकार बंधुओं में गुलामी की भावना या नरेंद्र मोदी के लिए नफरत अब भी है। बहुत कम लोग हैं, जिन्होंने गांधी परिवार की सामंतवादी आदतों के बारे में लिखा है। उलटे कइयों ने कहा है कि मोदी गांधी परिवार पर कीचड़ सिर्फ इसलिए उछाल रहे हैं, क्योंकि वह अपनी सरकार की गलतियों से ध्यान हटाना चाहते हैं।

चलिए मान लिया जाए कि मोदी अपनी सरकार की खामियां छिपाने के लिए इस तरह के मुद्दे उठा रहे हैं। लेकिन क्या हमें यह स्वीकार नहीं करना चाहिए कि इस तरह के मुद्दे जितने उठते हैं, उतना ही अच्छा है, क्योंकि इससे लोकतंत्र मज़बूत होता है? निजी तौर पर मेरा मानना है कि लोकतंत्र में जब भी सामंतवाद की बू आने लगती है, उस पर फौरन ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

मैं ऐसा मानती हूं, क्योंकि मैंने वे दौर देखे हैं, जब लोकतंत्र के नाम पर असली सामंतवाद था। हमारा लोकतंत्र अब भी इतना कमजोर है कि पांच वर्ष पूर्व देश के प्रधानमंत्री सोनिया गांधी के सामने सिर्फ इसलिए झुकते थे, क्योंकि वह उस राजपरिवार की बहू हैं, जिन्होंने 1947 से आज तक देश को अपनी जागीर माना है।

उस राजपरिवार के वारिस इस लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के मुख्य प्रतिद्वंद्वी हैं और इतना अहंकार है राहुल गांधी में कि महीनों से वह कहते आए हैं कि प्रधानमंत्री चोर हैं। मोदी ने जब पलटवार कर उनके पिताजी को भ्रष्टाचारी नंबर एक कहा, तो हल्ला मच गया। क्या हमको पूछना नहीं चाहिए कि ऐसा क्यों होता है?

हरियाली और रास्ता

प्रोफेसर, छात्र और प्रश्नपत्र

एक गुरु की कथा, जिन्होंने अपने छात्रों को जीवन को देखने का एक नया नजरिया दिया।

प्रोफेसर संजय हमेशा अपनी क्लास में बच्चों को कुछ नई सीख दिया करते थे। एक दिन उन्होंने क्लास में घुसते ही कहा, आज मैं आप सब की परीक्षा लूंगा। प्रोफेसर ने एक सफेद लिफाफे से सभी छात्रों को एक-एक प्रश्नपत्र दिया। वह प्रश्नपत्र को पलट कर सबकी मेज पर रखते जा रहे थे, जिससे कोई प्रश्न न पढ़ सके। जब सबको प्रश्नपत्र मिल गया, तो प्रोफेसर बोले, अब आप सब शुरू कर सकते हैं। किसी ने भी दूसरे की कॉपी में झांका या पूछने की कोशिश की, तो उसके नंबर काट लिए जाएंगे। सभी छात्रों ने प्रश्नपत्र पलटकर देखा और हैरानी से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। प्रोफेसर बोले, क्या हुआ, आप लोग इतने हैरान क्यों हैं? एक छात्र बोला, सर, इसमें कोई प्रश्न तो है ही नहीं। बस एक सादा कागज है और बीचों-बीच काला बिंदु। हमें जवाब क्या देना है? प्रोफेसर बोले, इसे देखकर आपके मन में जो भी आए, वह लिख दीजिए। आपके पास सिर्फ दस मिनट का वक्त है। सभी छात्रों ने लिखना शुरू कर दिया। दस मिनट बाद प्रोफेसर ने सभी के उत्तर इकट्ठा किए और उत्तरों को पढ़ने लगे। सबने उस काले बिंदु की व्याख्या की थी। प्रोफेसर बोले, आप सबने अपना पूरा जवाब सिर्फ एक काले बिंदु के ऊपर दिया है। किसी ने उस खाली सफेद हिस्से के बारे में कुछ नहीं लिखा। कुछ ऐसा ही हम अपनी जिंदगी के साथ भी करते हैं। काले दागों में इतना खो जाते हैं कि जिंदगी के सफेद पन्नों पर नजर ही नहीं जाती। यहां काले दाग से मेरा आशय है, हमारी जिंदगी की तकलीफें, बीमारियां, कोई दुख। पर हमारी जिंदगी में काफी कुछ बहुत अच्छा है, जैसे कि हमारा परिवार, दोस्त, छोटी-छोटी खुशियां। कभी सोचा है, खुश रहने के कितने कारण हैं! अगर हम गिनें, तो खुशी के कारण दुख के कारण से कई गुना ज्यादा मिलेंगे।

हम चाहें तो खुश रह सकते हैं या दुखी। यह सिर्फ नजरियों का खेल है।

मंजिलें और भी हैं

>> विप्लब महापात्र

सांपों को बचाने के लिए लगा दी जान की बाजी

मैं ओडिशा के अंगुल जिले का रहने वाला हूं। बचपन से ही मैं जीव-जंतुओं के प्रति संवेदनशील रहा हूं। मैं अक्सर पहाड़ों और घने जंगलों में घूमने चला जाता और ऐसे लोगों से जुड़ा रहा, जो जंगली जीवों को बचाने का काम करते हैं। एक बार एक गांव से मेरे पास फोन आया कि वहां एक अजगर निकल आया है, जिसे लोग मार डालने पर अमादा हैं। सूचना मिलते ही मैं वहां पहुंचा। मैंने देखा कि गांव के लोग उस बेजुबान को मारने की तैयारी में थे। जैसे-तैसे मैं उसे बचाने में कामयाब हो पाया। उस घटना से मुझे समझ में आया कि अब भी देश में जंगली जीवों के प्रति कितने सारे मिथक हैं। ऐसे मामलों में प्रशासन का रवैया सबसे बुरा था, जबकि हमारे यहां वन्यजीव संरक्षण कानून है।

मुझे पता चला कि देश में सैकड़ों मौतें सांप के काटने से होती हैं, जिसका बड़ा कारण ग्रामीण इलाकों में अंधविश्वास और सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है। लोगों को पता ही नहीं होता कि सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में एंटी-वेनम (जहर से बचने का इंजेक्शन) उपलब्ध होता है। इस दिशा में काम करने के उद्देश्य से मैंने 2012 में अंगुल में *पीपल फॉर एनिमल्स* की यूनिट शुरू की। मेरा काम न केवल जीव-जंतुओं का संरक्षण करना था, बल्कि सांप व अन्य जीवों के प्रति लोगों का नजरिया बदलना भी था। मैंने अपने दो दोस्तों के साथ काम शुरू किया। बाद में मेरी टीम से और भी लोग जुड़ने लगे। आज मेरी टीम में 50 से ज्यादा लोग हैं, जो ओडिशा के अलग-अलग जिलों व इलाकों में काम कर रहे हैं। यह काम करते हुए मुझे कई तरह की परेशानियों और जोखिम का सामना करना पड़ा, पर मैंने हार नहीं मानी। एक बार रेस्क्यू के दौरान मुझे एक जहरीले सांप ने काट लिया। हफ्ते भर मैं अस्पताल में रहा। जानवरों को बचाते हुए दो बार तस्करों ने मुझ पर गोलियां भी चलाईं, पर मैं बच गया। इन घटनाओं के बाद मेरे परिवार के मन में भी डर बैठ गया। मैं भी उधेड़बुन में था कि इस काम को जारी रखूं या नहीं। पर बेजुबानों को बचाना मेरी जिंदगी का मिशन बन चुका था। हालांकि इस काम में फंडिंग की समस्या थी। पर लगातार मेरे प्रयासों ने आम जन के साथ अधिकारियों को भी प्रभावित किया। मेरे काम और जागरूकता अभियान के चलते 2015 में ओडिशा सरकार ने सांप के काटने से मरने वाले व्यक्ति के परिवार को चार लाख रुपये का मुआवजा देना शुरू किया। लोगों को इस योजना की कम जानकारी है, इसलिए मैंने एक हेल्पलाइन शुरू की है।

अगर हम अपने जंगली जीवों को नहीं बचाएंगे, तो एक दिन धरती से मानव जीवन भी समाप्त हो जाएगा।

मेरा लक्ष्य 'सांप के काटने से होने वाली मौतों की संख्या को शून्य करना है।' इसके लिए मैं स्कूल, कॉलेज और गांवों में जा-जाकर लोगों को सांप के काटने पर तुरंत अस्पताल ले जाने के लिए जागरूक करता हूं। अब तक हमारी टीम ने करीब बीस हजार सांप, बिल्ली, पक्षी, बंदर, कछुआ, गिरगिट, छिपकली को बचाया है। इसके लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में हमारे काम का रिकॉर्ड दर्ज किया गया है।

मैं एक शेल्टर होम बनवाना चाहता हूं, जहां पर जानवरों को रेस्क्यू के बाद रखा जा सके। साथ ही, एक एंबुलेंस सर्विस भी शुरू करनी है। अगर हम अपने जंगली जीवों को नहीं बचाएंगें, तो एक दिन धरती से मानव जीवन भी समाप्त हो जाएगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

खुली खिड़की

विश्व में हुनरमंद प्रवासियों की स्थिति

दुनिया के कई देशों में विभिन्न कार्यों में दक्ष प्रवासी नागरिक कार्य करते हैं। विभिन्न देशों में इन प्रवासियों को मिलने वाले सहयोग का आंकड़ा अलग-अलग है।

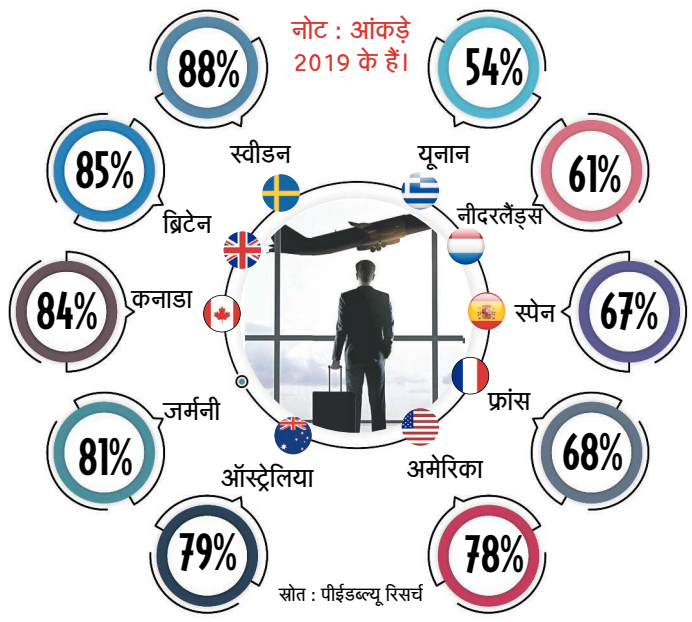

मुनिश्री का प्रभाव

विख्यात जैन मुनि आचार्य सुदर्शनजी महाराज गांवों और नगरों में पदयात्रा कर लोगों को दुर्व्यसनों को त्यागने और सदाचार की प्रेरणा दिया करते थे। उन्होंने विभि न्न धर्मों का गहन अध्ययन किया था। वह कहा करते थे कि जब तक मांस-मदिरा तथा अन्य नशीले पदार्थों का त्याग करके सात्विक जीवन नहीं अपनाओगे, तब तक आत्मिक उन्नति असंभव है। प्रत्येक धर्म का यही सार है कि जीवन को पवित्र और शुद्ध बनाओ।

सत्संग

एक बार मुनिश्री शिष्य मंडली के साथ पंजाब के एक गांव में शाम के समय पहुंचे। उन्हें पता चला कि यहां के सभी ग्रामीण सिख हैं। रात बिताने की व्यवस्था गुरुद्वारे में की गई। गुरुद्वारे में ग्रंथी ने सभी मुनियों से भोजन करने के लिए आग्रह किया, तो उन्होंने कहा, 'हम सूर्यास्त से पूर्व मात्र एक बार भिक्षा मांगते हैं। रात में जल भी ग्रहण नहीं करते।' सुबह होते ही ग्रंथी ने मुनिश्री से प्रार्थना की, 'महाराज गुरुद्वारे में गुरु ग्रंथ साहब के समक्ष सिर ढककर खड़े रहने का नियम है।' मुनिश्री ने सहर्ष सभी को ऐसा करने का आदेश दिया। सभी मुनिगण गुरु ग्रंथ साहब के समक्ष नतमस्तक हुए। मुनिश्री ने गुरु ग्रंथ साहब का अध्ययन किया हुआ था। उन्होंने गुरुवाणी पर प्रभावी प्रवचन किया और दुर्व्यसनों-नशा सेवन के परिणाम बताए। सभी उनके प्रवचन सुनकर अभिभूत हो उठे। सभी ने उन्हें श्रद्धा से भोजन कराया। अगले दिन उन्हें सादर विदा किया गया।

-संकलित